वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 45	Year 5	Volume 9	JUNE 2016 Chandigarh	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 2

fopkj

मन में आई पाप–वृत्ति को कैसे दूर भगायें?

महात्मा प्रभु ने अपनी सन्ध्या–सोपान पुस्तक में अपने एक प्रश्न––––– कि मन में आई पाप–वृत्ति को कैसे दूर भगायें, इस का समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा है कि पाप–वृत्ति ऐसे सामने आया करती है जैसे चोर–डाकू संभल–संभलकर आता है। यदि घर वाला सावधान न हो और बल न रखता हो तो लूटा और पीटा जाता है, किन्तु यदि घरवाला तुरन्त अपना बल दिखलाये तो चोर–डाकू दुर्बल हो जाते हैं और घर वाले के बल का अनुमान कर लेते हैं। यदि उसे अपने से अधिक चैतन्य और बलवान सश्क्त पाते हैं तो तुरन्त भाग जाते हैं, नहीं तो सामने डटे रहते हैं।

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher &
Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

नितान्त यही दशा साधक के साथ पाप–वृत्ति के सामने हुआ करती है। अतः जब पाप–वृत्ति सामने आये तो साधक चौकस होकर कड़कर बोले –

'अपेहि मनसस्पतेऽपकाम परश्चर। परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः।।' (ऋग्वेद 10/164/1)

इस मन्त्र में ईश्वर मनुश्यों को प्रार्थना के लिए प्रेरित कर कहते हैं कि '

हे मन को पतित करने वाले कुविचारों, दूर हो जाओ। दूर भागो। परे चले जाओ। दूर के विनाश को देखो। जीवित मनुश्य का मन बहुत सामर्थ्य से युक्त है।'

एक अन्य मन्त्र भी पापवृत्ति को हटाने की प्रेरणा करता है। मन्त्र हैः

'परोऽपेहि मनस्पाप, किमशस्तानि भांससि। परेहि न त्वा कामये,
वृक्षां वनानि सं चर, गृहेशु गोशु मे मन।।'
(अथर्ववेद 6/45/10) मन्त्रार्थः

'हे मन के पाप दूर हट जा। क्यों तू बुरी बातें बताता है? हट जा। मैं तुझको नहीं चाहता, वनों में व वृक्षों में जाकर फिरता रह। मेरा मन घर में और गौ आदि पशुओं की पालना में है।' महात्मा जी बताते हैं कि मन्त्रस्थ विचार कि 'दूर के विनाश को देखो' का तात्पर्य यह है कि उस बुरे विचार से भविश्य में होने वाली हानि का विचार कर उसका निवारण करना है। जो व्यक्ति साधना नहीं करता उसको यह बात समझ में नहीं आती है। जब मनुश्य आध्यात्मिक विद्या का विद्यार्थी बनता है, तो वह साधनाएं करता है। उन साधनाओं और तप के प्रताप से उसके शीशे साफ होने लगते हैं। इन शीशों से वह देखता है। यह शीशे दो हैं–एक बुद्धि का, दूसरा मन का। बुद्धि का शीशा तो दूरबीन है (दूर की चीज को देखने वाला) और मन का शीशा खुर्दबीन (छोटी से छोटी चीज को देखने वाला), अतः साधक जब प्रत्येक कार्य को इन शीशों से देखता है, तो उसे एक छोटे से छोटा पाप भी मनरूपी लघुदर्शी यन्त्र से बड़ा भारी दिखाई देने लगता है। उस पाप की गति और बढ़ाने का अनुमान वह उसकी हलचल से लगाता है। फिर जब दूरदर्शी यन्त्र लगाकर उसे देखता है, तो उसका भयंकर रूप उसके सामने आ जाता है और वह सोचता है–

1– इस पाप का बदला पाने के लिए एक तो मुझे जन्म अवश्य लेना पड़ेगा,
2– इस पाप के कुसंस्कार से दूसरे जन्म में भी मुझे वैसा ही पाप फिर घेरेगा।
3– फिर प्रकटतः उस पाप के कारण से दण्डित हो जाऊंगा और मेरा जीवन कश्ट में फंस जायेगा।
4– मेरे माता–पिता यदि धनाढ्य हुए, सम्मानित हुए तो उनके धन–माल का सर्वनाश होगा, उनकी बड़ी बदनामी होगी और मेरे माथे पर कलंक का टीका रहेगा।
5– यदि मेरी आयु थोड़ी हुई तो माता–पिता के सामने ही भरी जवानी में मेरे मरने का उन्हें अति दुःख होगा।
6– यदि मेरा जीवन उस जन्म में और भी भ्रश्ट तथा पतित हो गया, तो फिर मुझे अनेक जन्म लेने पड़ेंगे।
7– यदि मेरे जन्म का वायुमण्डल अच्छा हुआ और मेरी आयु कम हुई तो मुझे यह खेद रहेगा कि मैं कुछ कमाई नहीं कर सका।

इसका निश्कर्श बताते हुए महात्मा प्रभु आश्रित जी कहते हैं कि इस प्रकार साधक जब विचरपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता है, तो उपासना से स्वच्छ किये हुए इस मनरूपी लघुदर्शी यन्त्र और ज्ञान से पवित्र किये हुए बुद्धि रूपी दूरदर्शी यन्त्र के प्रयोग से वह पाप से दूर और पुण्य के समीप रहकर अपने जीवन–पथ पर चलता जाता है और उन्नत होता जाता

महात्मा प्रभु आश्रित

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ
Wholesaler & Retailer of :
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

जीवन वैसा ही बन जाता है जैसा कि हम बनाते हैं

नीला सूद

मैं अपने पति के साथ सैक्टर 26 स्थित अंध विद्याालय ैबीववस वित जीम इसपदक के पास से जा रहा थी। गर्मी काफी थी हम उस परिसर को देखने के लिये रुक गए। तभी हमारी मुलाकात एक वृद्ध सरदार जी के साथ हो गई । वह परिसर के बाहर ही छाया में बैठे हुए थे। बातचीत हुई तो पता लगा कि उनका पोता उसी स्कूल में पढ़ता है । आगे बात बढ़ी तो मालूम हुआ कि वह चण्डीगड़ से लगभग 25 किलो मीटर दूर बनूर में रहते हैं और अपने पोते को रोज स्कूटर पर सुवह 8 बजे लेकर आते हैं, पांच घंटे बाहर इंतजार करते हैं और फिर दो बजे वापस ले कर जाते हैं। मैने उन्हें कहा कि बेहतर होगा आप बस में आया करें क्योंकि आजकल सड़कों पर वाहन बहुत हो गए हैं। तो उन्होंने बताया कि उनका गांव बनूर से भी 3 किलो मीटर अन्दर जा कर है। अन्धे बच्चे को बस में बिठाना इतना आसान नहीं होता, इस लिये स्कूटर पर ही ले आता हूँ। मैंने उन्हें कहा कि हम चण्डीगढ़ में ही रहते हैं यदि कभी रुकना हो तो मेरे पास रुक जाया करो। सरदार जी ने धन्यवाद करते हुए बताया कि वह चण्डीगड़ के 17 सैक्टर के पंजाब और सिन्ध बैंक से सन् 2000 में मैनेजर के पद से रिटायर हुए थे इसलिए इस शहर में उनकी बहुत वाकफियत है। कहने का अर्थ है कि सरदार जी की आयु 75 वर्ष के लगभग है। मजे की बात ये है कि वो मुस्कराते हुए बातें कर रहे थे और उन्हें किसीसे कोई शिकायत नहीं थी। उन्होंने हाथ जोड़ते हुये कहा, ''परमात्मा ने यह ड्यूटी दे रखी है, उसी में जीवन बहुत अच्छा कट रहा है।''

इसी तरह एक बार हमारा परिवार नैनीताल घूमने गया था। हम भीमताल से पैदल होटल की ओर आ रहे थे तो एक बुढ़िया पर नजर गई जो की लकड़ी का बोझा पीठ पर लादे बहुत तेजी से जा रही थी। चेहरे पर संतोश व मुस्कराहट झलक रही थी। हमें देखा तो मुस्करा दी। हमने कहा, ''माँजी राम राम, क्या हाल है आपका?'' जबाव मिला, ''भगवान की बड़ी कृपा है। गंगा माँ की बहुत कृपा है।''बात करने के लिये मैंने पूछा कि इतना बोझा उठाए इतनी तेजी से क्यों जा रहे हो? जबाव मिला, ''घर जा कर छोटे पोते पोतियों का खाना बनाना है। वे मेरा रास्ता देख रहे होंगे।'' पूछा कि बच्चों की माँ कहाँ है तो बताया कि कई महीने से बीमार चल रही थी। अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है इसलिये मुझे ही सब देखना पड़ता है। देखने वाली बात यह है कि घर में इतनी मुसीबत होने के बावजूद भी वह कह रही थी कि भगवान की बड़ी कृपा है। गंगा माँ की बहुत कृपा है।

मैं जब 1980 के दशक में चंडीगढ़ आई थी तो मेरे तायाजी जो उस समय 85 साल के थे और सैक्टर आठ में रहते थे हमसे मिलने हमारे घर सैक्टर इक्कीस में साईकिल पर आते थे। अच्छे बड़े पद से रिटायर हुए थे, फिर भी साईकिल पर ही चलते थे। बातचीत में पता लगा कि वो अपने आप को स्वस्थ रखने के लिये ही साईकिल पर चला करते थे। आज हम अपनी जीवन शैली को देखें तो ऐसा लगता है कि पिछले 40 साल में सब कुछ बदल गया है। गर्मी पहले भी पड़ती थी पर आज दो दिन पड़ जाए तो हाहाकार मच जाती है। दिन में लोग बाहर नहीं निकलते और अगर निकलना पड़ता है तो कार पार्किंग के समय भी एसी चल रहा होता है। हम इस बात को भूल गए हैं कि पसीना निकलना सेहत के लिये बहुत आवश्यक है और इसी तरह सूर्य की किरणे विटामिन डी का सब से बड़ा स्रोत है। आज हम उस की पूर्ति विटामिन डी के कैप्सूल खा कर करते हैं। इस आरामदायक जीवन का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि हम में थोड़ा–सा भी कश्ट सहन करने की शक्ति नहीं रही। चारों ओर के वातावरण से अपेक्षाएँ बढ़ गई हैं और जब अपेक्षाएँ पूरी नहीं होती तो शिकायतें ही शिकायतें सुनने को मिलती हैं। ये शिकायतें भी मानसिक रोगों का एक कारण है। जब व्यक्ति का मन रोगी रहता है तो शरीर भी रोगी हो जाता है। जैसा कि यह घटना बताती है। चण्डीगड़ के पोश सैक्टर में मैं किसी काम से गई थी

तो वहाँ किसी ने मुझे पुकारा, मुड़कर देखा तो एक महिला जो किसी समय हमारी मकान मालकिन रही थी मुझे बुला रही थी। मुझे अपने पास आता देख अपनी मर्सिडीज ; डमतबमकमेद्ध गाड़ी से उतरी। मैने हाल पूछा तो वही पुराना रोना शुरू कर दिया, '' तू देख नहीं रही मैं कितनी कमज़ोर हो गई हूँ। गोडों में दर्द रहता है और पीठ में भी। अच्छी काम वाली मिलती नहीं, अपने से काम होता नहीं बस किसी तरह काट रहे हैं।

तुम्हारे जाने के बाद हमने कोई किरायेदार भी नहीं रखा, अच्छा किरायेदार मिलता ही कहाँ है? बाहर निकलो तो **जतंपिब** इतना है कि आदमी सोचता है अन्दर ही अच्छे हैं''

इन सब बातों से एक बात तो निश्चित है कि हम जैसा जीवन बनाएँ वैसा ही बन जाता है। पर जो व्यक्ति जीवन में संघर्श को स्थान देते हैं, थोड़ा बहुत कश्ट सहन करने की आदत बना लेते हैं, अधिक आराम को दूर रखते हैं उनका जीवन दूसरों की अपेक्षा अच्छा ही देखने को मिलता है। निर्णय आपका है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE **अवश्य दे**
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–

Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
Bhartendu Sood PNB 0095000100475207
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**

3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

if=dk esa fn;s x;s fopkjksa ds fy, ys[kd Lo;a ftEesokj gSA ys[kdksa ds VsyhQksu u- fn, x, gS
U;kf;d ekeyks ds fy, p.Mhx<+ ds U;k;y; eku; gSA

Bhartendu Sood Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

अकेला चना भी भाड़ फोड़ सकता है

मुझ जैसे साधारण व्यक्ति सदियों से चले आ रहे मुहावरों और लकोक्तियों को परिवर्तिन न होने वाला सत्य मान कर चलते हैं। पर कुछ ऐसे असाधारण प्रतिभा वाले व्यक्ति होते हैं जो इन सदियों से चले आ रहे मुहावरों और लकोक्तियों को अपने असाधारण कृत्यों से झुठला देते हैं और उन को बदल देते हैं। महाराश्ट्र प्रान्त के वाशिम जिले के एक छाटे से गांव के एक दलित मजदूर ने, जिन का नाम बापूराव ताजने है, अकेले ही एक ऐसा साहसिक कार्य कर दिया है कि अब यह कहना ठीक प्रतीत नहीं होता कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता । बल्कि उनके साहसिक कार्य को देख कर अब यह कहना होगा कि अकेला चना भी भाड़ फोड़ सकता है।

हुआ ऐसे कि इस भयंकर सूखे के समय जब बापूराव ताजने की पत्नी गाँव में ऊँची जाति वालों के कुएँ से पानी भरने गई तो उन्होंने उसे वहाँ पानी भरने से इंकार कर दिया। बापूराव ताजने, ऊँची जाति वालों के इस शर्मनाक कार्य और अपने मूल अधिकारों के हनन से इतना अधिक क्रोधित हुआ कि उसने दलितों के लिये अलग कुआँ खोदने का प्रण ले लिया। उस के इस विचार से न केवल उसके अपने परिवार के सदस्य उस पर हँसने लगे अपितु उसके समुदाय के बाकी सदस्य भी उसका मखोल उड़ाने में लग गये। पर बापूराव ताजने ने किसी की भी परवाह नहीं की और अकेले ही दिन रात एक करके 40 दिनों में अपने लिये अलग कुआँ खोद दिया और अब सारे ग्राम के दलित उस से पानी भर रहे हैं। क्या इसको जानने के बाद भी आप कहेंगे कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता? सन 1957 में बनी फिल्म ''नया दौर'' भी ऐसे ही थीम को लेकर बनाई गई थी । उसमें बताया गया है कि कुछ ताँगेवाले रेलवे स्टेशन से पास के गाँवों तक अपने ताँगो पर सवारियाँ ढोकर अपना पेट भरते थे। परन्तु उनकी जीविका तब ख़तरे में पड़ गई जब वहाँ का एक रईस सवारियाँ ढोने के लिये बस खरीद कर ले आया। ऐसे में ताँगे पर बैठने को कोई तैयार न होता था। परन्तु उस गाँव का एक ताँगेवाला नवयुवक जो कि फिल्म का नायक है, बापूराव ताजने की तरह हार मानने वालों में नहीं था, उसने ताँगों के लिये एक अलग से सड़क बनाने की योजना अपने साथियों के सामने रखी। पर हुआ वही जो आम तौर पर होता आया है। सब लोग उसकी इस योजना पर हँसने लगे।

उस नवयुवक ने अपने साथियों की परवाह किए बिना ही सड़क निर्माण का कार्य शुरू कर दिया। जब दूसरे ताँगेवालों ने देखा कि सड़क तो सचमुच बननी शुरू हो गई है तो वे भी उसके साथ हो गए और देखते ही देखते सारा गाँव उसके सहयोग के लिये उमड़ पड़ा। न केवल सड़क का निर्माण कार्य पूरा हुआ अपितु बसवाले को ताँगे और बस की दौड़ में भी हार का सामना करना पड़ा।

इतिहास बताता है कि हर दौर में कुछ साहसी व्यक्ति इस धरती पर आते हैं जो कि कुछ करने का प्रण लेते हैं और उनके एक ही कदम ने समाज को ही बदल डाला। महर्शि दयानन्द सरस्वती ने जबकि सारा पंडित वर्ग उनके खिलाफ था और उनके प्राण लेने पर उतारू था अकले ही पाखण्डों, समाज में फैली कुरीतियों और अन्धविश्वासों के विरूद्ध युद्व छेड़ दिया और करोड़ों व्यक्तियों को जीवन की नई दिशा दी। महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा के दौरान नमक बना कर सारे देश को अंग्रेजी हकूमत के सामने लाकर खड़ा कर दिया और भारतीयों को यह एहसास करवा दिया कि स्वराज्य हमारा हक है।

यह भी सत्य है कि हम शायद उन ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच सकते जहाँ ये पुण्यात्माएँ पहुँची हैं पर फिर भी हम सबमें वह योग्यता है कि हम अपने आसपास के संसार को कुछ हद तक सुधार सकें और यही न सोचते रहें कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

Richness of charity

"One must earn money as though one is going to live forever and that one must 'donate' money as though one is dying the very next day."

Our scriptures emphasise on the importance of charity and generosity, propounding empathy and love for fellow human beings. When 'head and heart' work in tandem, a person can become a true benefactor to distressed people.

Our lives are either sculptures or sand dunes - it is up to us to shape our lives as sculptures of worthiness and timelessness by leaving behind a rich legacy to be emulated by next generations. Charity and philanthropy are great qualities to be handed down that way.

The size of a man is measured by the depth of his conviction, the height of his aspirations, the breadth of his mercy and the reach of his love.

With conviction, with the heart and means to help, if man can do charity, the breadth of his personality stretches to the widest.

Charity can be shown in more ways than one. By teaching a trade, a vocation, by helping in setting up business which in turn prevents the 'need' to receive charity one can prove to be somebody's benefactor: Those with more time at their disposal than money to spare can volunteer to help others in 'kind'. Charity can reach people, in many forms.

"Shateshu jaayathe sooraha, Sahasreshucha panditaha, Vakthaa Dassa sahasreshu, daathaa bhavathinaa navaaa" goes a Sanskrit saying. It means, "It is possible for a valorous one being born among a hundred, a scholar among a thousand, an orator among ten thousand, but it is a rarity for a charitable person being born among them all".

But there are heartwarming stories of daily-wagers, house maids and labourers who live their lives frugally due to their economic condition, but who make donations through their savings, to enable others have the opportunities they missed, proving that one does not have to be rich to be charitable and philanthropic. Salutations to such hearts who are blessed with richness of charitable thoughts and deeds.

Recently media carried a beautiful and heartwarming story of one Basant Kumar who has been carrying his elder brother Krishna Kumar on his back for the last 15 years, ever since the 19-yearold contracted polio and beauty is that both defied odds to crack the prestigious IIT exam. Born to an impoverished family in Bihar, the brothers struggled through school and later coaching centres in Rajasthan's Kota. In an interview Krishna said, "Basant serves food to me, even helps me attend my nature calls daily and performs all my daily routine work apart from taking me to classes,"

Basant told that Polio crippled Krishna couldn't join school for two years. When he grew up, he started to take Krishna with him to school and that's how the journey of education started together. Then we shifted from the village school – which was till class 8 only – to a secondary school in a neighbouring village. Continuing he said that he liked to carry his brother on his back as he enjoyed working and serving his brother Two of their elder brothers worked in a Mumbai motor garage to put Basant and Krishna to school.

This is the one beautiful example of charity, generosity, empathy , love and family values.

जीवन एक सम्पदा

इन्द्रजीत भाटिया

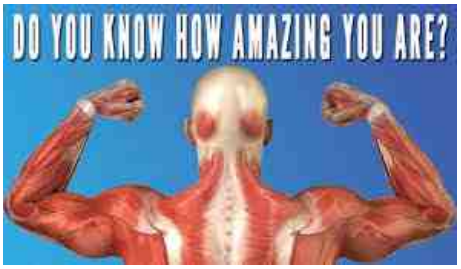

जुन्नेद नाम के फकीर बड़े ऊँचे दर्जे के विद्वान थे। उनके पास रूहानी खजाना था। एक दिन उनके पास एक युवक आया और बोला मैं मरना चाहता हूँ। मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है जिसके सहारे मैं जी सकूँ। जुन्नेद थोड़ी देर चुप रहे फिर बोले, ''ऐसे क्यों बोलते हो? तुम्हारे पास तो एक बहुत बड़ा खजाना है।'' यह सुनकर युवक हैरान परेशान था और बोला, ''आप ऐसा कैसे कह रहे हैं? मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं, खजाना कहाँ से आया?'' जुन्नेद उस युवक पर हँसने लगे और बोले, ''मेरे साथ यहाँ के बादशाह के पास चलो। वह बहुत समझदार हैं, छुपे खजाने को झट पहचान लेंगे।'' युवक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह उलझन में पड़ गया। जब कुछ समझ नहीं आया तो बोला, '' चलो, मुझे भी पता लगे कौन सा खजाना मेरे पास है?''

जुन्नेद बोले, ''जैसे तुम्हारी आँखें, हृदय मस्तिश्क आदि। उनमें से किसी एक को भी बेचोगे तो 1000 दिनार मिल जाएँगे। युवक जुन्नेद की बात सुनकर हैरान था। कुछ देर बाद झुंझलाकर बोला, ''मैने तो सुना था जुन्नेद बहुत ज्ञानी है और उस के पास रूहानी खजाना है। पर आप तो पागल लगते हो, भला क्या कोई अपनी आँखें, हृदय या मस्तिश्क भी बेचता है?'' जुन्नेद जोर से हँसे और बोले पागल मैं नहीं पागल तुम हो। इतनी कीमती चीज़ों के मालिक होकर भी कह रहे हो मैं गरीब हूँ। मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं। बताओ पागल तुम हो कि मैं? अभी जाओ और ईश्वर ने तुम्हें ये जो बहुमूल्य खजाना दिया है उसका प्रयोग शुरू कर दो, मालामाल हो जाओगे। ईश्वर हमे अनन्त खजाने देता है। उन्हें खोजना व खोदना तो खुद ही होता है। जो इस जीवन के मूल्य को नहीं समझता वह सम्पदा कहाँ पा सकता है। जीवन वैसा ही बन जाता है जैसा हम इसे बनातें हैं। यह मनुश्य की सोच पर निर्भर करता है। जीवन को मृत्यु भी बना सकते हैं व अमृत भी। मृत्यु तो स्वयं आ जाएगी, उसे बुलाने की ज़रूरत नहीं। बुलाओ अमृत को, बुलाओ परम जीवन को, वह तो साधना से और संकल्प से ही प्राप्त होगा।

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं, जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति, नास्ति जागरिते भयम्

अर्थ– परिश्रमशील व्यवसायी व्यक्ति को कभी गरीबी नहीं आती, सदा जप करने वाले से पाप दूर रहते हैं, मौन रहने पर मौन रहने पर कलह समाप्त हो जाता है और जागते हुए व्यक्ति को कोई भय नहीं होता।

(चाणक्य नीति)

पद्यार्थ–

श्रम को करके धन हाथ लगे,
बिन काम कहाँ धन कायर पावे।
जप से कब पाप रहे मन में,
जब जाप करे तब पाप न आवे।
झगड़ा तगड़ा लगता न कभी,
चुपचाप रहे मत गाल बजावे।
भय का कब नाम निशान रहे,
जब जाग सदा मन को समझावे

Yoga is wholesome but not the ultimate

When I am writing this piece, I look at the subject as a global citizen with an open mind and for a minute I forget that I'm an Indian.

Yoga or any other form of physical, mental or spiritual act/exercise/healing aims at achieving three objectives. First, a healthy and fit body, second, the mind that is at peace with the environment around, a source of happiness and third, behavioral refinement i.e. good manners, pleasing conduct and etiquette, which automatically come with the control of anger & intolerance and cultivation of virtues like patience, truthfulness, non-violence in thought and actions, empathy and cleanliness. Ultimate aim is to achieve internal as well as outer well being.

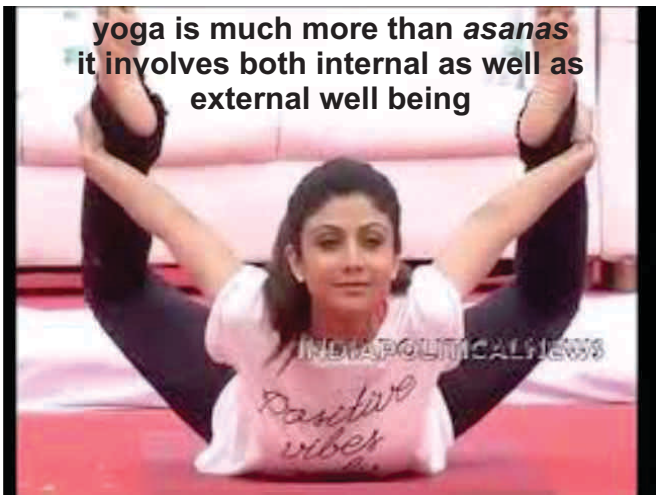

Those who move around globe will agree with me that we are far behind the people of most of the countries whether in east or west or even north in the matter of above stated attributes though Yoga is an alien word for them. In other words even without Yoga they are ahead of us. Or one can say that for physical, mental and spiritual upliftment, every country or state has its own proven ways.

To elaborate it, when it comes to physical health which includes fitness and body, we stand nowhere in international arena. We as a nation of 125 crore population struggle even to win one Gold in the Olympics while many small countries like Bahamas, Estonia and Denmark with population less than one crore walk away with a 3-4 Gold medals. Not to speak of China, another country with almost same population what we have, the medal tally runs into three figures. People in these countries look much healthier and fit.

It gets further collaborated considering that in the matter of life expectancy, child mortality and women health, we are almost at the bottom, far behind even Sri Lanka.

There is nothing to suggest that we are good mannered, refined and cultured. We cut a very sorry figure with our behavior. Even with our brown skin we are a highly racial country. I just wonder what would have been the state if we were white skinned. Our behaviour with whites is different from the way we treat blacks. Type of hatred what we see in India for fellow countrymen, on the basis of caste, is not to be seen anywhere else best manifested by these two incidents--- a cook in the school happened to be a dalit, the high caste students stopped taking food, then a dalit had to dig a well to quench the thirst of this wife because the high castes did not allow his wife to take water..

With all these minus points and shortcoming, do we have any reason to take pride in Yoga as being preached by the people at the helm? Or to declare that we will teach yoga to all in the Globe as Yoga gurus. Why should they learn a new art when they already have their own techniques which give better results. Again yoga has been highly misunderstood in our country. It is not only performing a few *asnans* as we find on yoga day. The real yoga is to rid our minds of hatred by embracing *yamns* and *niyams*. The five *yamas* are non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy and non-covetousness. The five *niyamas* are cleanliness, contentment, austerity, self-study and surrender to God., which one can achieve by practice and not by these public shows at the expense of tax payers money . Unfortunate part is that a few who lead in such shows have the most polluted minds.

Yoga is indeed very good but to say that it is ultimate in making a man better human being is an exaggeration. In my own country I find many such facets of various religions, being practiced by the people, that are capable of making a man better human being like leading the life cycle in four Ashrams as enunciated in Veda, life routine as prescribed in Jainism

five namajs and Rojas as ordained in Islam, spirit of service as taught in Christianity , 'Wand chakana' as is practiced in Sikhism. Not only this, I know thousands of such people in our own country who without having taken to Yoga lead a highly virtuous and healthy life.

Mother Teresa is one example. Then I believe politicians like **V. S. Achuthanandan**, Karunanighi or even Ex PM Morarji Desai lead a healthy life without doing yoga.

In conclusion, I have only to say that yoga is indeed good but not the ultimate which may merit this sort of publicity by the government. There are more pressing issues which need attention of the govt. And second, Yoga is not just doing physical exercises; it is incomplete without purifying the mind.

Alone Yoga will not make any difference in this

सम्पादकिय

गुरूकुल वाले आर्य समाज के नाम पर रूड़ीवाद फैलाना बन्द करें

यह देख कर बहुत दुख होता है कि पिछली शताब्दी में जो कटर आर्य समाजी होते थे आज उन में 99: की सन्तान आर्य समाजी नहीं है। आर्य समाजों की हालत बहुत अधिक शौचनिय है। वड़े वड़े भवन है पर मुश्किल से 10––12 व्यक्ति उन में भी अधिक बृध, सप्ताहिक सत्संग के लिये आते हैं। कारण प्रचारकों के नाम पर गुरूकलों के पढ़े शास्त्री और आचार्य होते हैं,अधिकतर उन में पाशान युग की रूढ़ीबादी बातें ही बताते हैं जो कि आज के पढ़े लिखे वर्ग को नहीं भा सकती।

आर्य समाज के सस्थांपक महर्शि दयानंद सरस्वती ने तो बहुत ही उन्नतीशील और प्रगतीशील समाज की बात की थी। उन्होने तो ऐसे समाज की बात की थी जिस में नारी को पुरूश के समान ही अधिकार हों और वह घर की दासी न होकर पुरूश के समान समाज के हर क्षेत्र में अपना स्थान बनायें। डाक्टर , अधियापिका, इंजिनयर, न्यायधीश , नेता सब कुछ बने। यही कारण था कि उस समय का सब से पढ़ा लिखा वर्ग आर्य समाज की और झुका। पर यह गुरूकुल वाले महर्शि दयानंद सरस्वती के नाम पर ऐसी बातों का प्रचार करते हैं जिस कारण पढ़ा लिखा वर्ग आर्य समाज को एक रूढ़ी वादी संस्था मानने लगा है। कहां तो हमारी सरकार आज समाज सुधार के नाम पर वह सब कर रही है जो महर्शि दयानंद सरस्वती ने 140 वर्श पहले कहा था और यह लोग इतनी महान आत्मा के नाम पर गलत प्रचार करने में लगे है।

अभी पिछले सप्ताह मैं आदत के अनुसार एक आर्य समाज के सप्ताहिक सत्संग में गया था। वहां उनके पुरोहित का भाशण हो रहा था। वह महोदय कहते हैं––––वेदों में स्त्री को कमाने का आदेश नहीं है और जो व्यकित अपनी स्त्री द्वारा नौकरी करवाता है और उस की कमाई खाता है वह पापी है। आज हमारे उपदेशक ऐसी बातें वेदों के नाम पर करेंगे तो पढ़ा लिखा वर्ग आर्य समाज नहीं आयेगा ।

आर्य समाज इसलाम या सिक्ख धर्म की तरह कोई अलग मत तो है नहीं कि व्यकित वाहर नहीं निकल सकता। हिन्दु धर्म में किसी भी हिन्दु के पास हिन्दु रहते हुये ही बहुत से और विकल्प है। अगर साईं बन गया तब भी हिन्दु है और हरे कृश्णा में चला गया तब भी हिन्दु। इस कारण हमारे आर्य समाजियों के बच्चे गुरूकुल वालों की ऐसी बातें सुनने के बाद और जटिल कर्मकाण्ड से तंग आकर दूसरे मतों में चले जाते है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि बेदों की कोई बात आज के युग के अनुसार अगर आप्रासंगित है तो उसे छोड़ दो। उदाहरण के तोर पर कृशि के लिये बैल की बात की गइ है तो कि आज के समय में आप्रासंगित है। हजारों दूसरी बातें हैं जो हमारे जीवन को अच्दा बनाती हैं, वर्तमान समस्याओं का समाधान बताती है , उन सब को लोगों की साधारण भाशा में बतायें अच्छा होगा हमारे आर्य समाज स्वामी दयानंद और महात्मा हंसराज द्वारा दिखाये रास्ते पर पुन्ह लौटें। इन गुरूकुलों का स्वामी दयानंद की विचारधारा से कोई मेल नहीं। यह गुरूकुल तो महात्मा श्रधानन्द द्वारा स्थापित गुरूकुलों का बिगड़ा रूप है जो कि आर ऐसे ऐस और पौराणिकों के अधिक नजदीक हैं। इनका उदेश्य दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज का प्रचार न हो कर संस्कृत और संस्कृति प्रचार के नाम पर रूढीबाद का प्रचार है।यदि आर्य समाज स्वामी दयानंद के सपनों का आर्य समाज बनना चाहता है जिसने की 100 वर्श पहले देश को नई दिशा दी थी तो गुरूकुल, संस्कृत और कर्मकाण्ड तीनो से अलग होना होगा। आर्य समाज तो 1876 में स्थापित हुआ और यह गुयकुल 1920 में आये। आर्य समाज और इनका कोई मेल नहीं। जिन बातों के लिये हम इसलाम की अलोचना करते हैं अगर उन्ही बातों का हम प्रचार करेंगे और अपनायेगें तो कौन आर्य समाज आयेगा। आर्य समाजों का उदेश्य पुरोहितों द्वारा सस्कार करवा कर या हवन करवा कर पैसा कमाना नहीं होना चाहिये अपितु मानव के जीवन को अच्छा बनाने के वेद की बातों का प्रचार साधारण लोंगों की भाशा में होना चाहिये ओर उन बातों को

अंकुरित अन्न

विजय कुमार सिंघल

कई प्राकृतिक चिकित्सक इसे 'अमृतान्न' कहते हैं। हम इसे भोजन का अंग ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भोजन भी बना सकते हैं। यदि यह सम्भव न हो, तो इसे नाश्ते के रूप में सेवन करना बहुत अच्छा रहेगा। यह पकाये हुए अन्न से अधिक लाभदायक होता है और पचने में अत्यन्त हलका होता है। अन्न को अंकुरित करने की विधि बहुत सरल है।

साबुत अनाजों जैसे चना, गेहूँ, मूँग, उड़द, मैथी दाने आदि को आवश्यक मात्रा में लेकर साफ कर लें और एक–दो बार साफ पानी में धो लें। अब इनको किस अब इनको किसी कटोरे में रखकर पानी में भिगो दें। 10–12 घंटे भिगोये रखने के बाद उनको किसी कपड़े में लपेटकर उसी कटोरे में रख दें और पानी निकाल दें। कटोरे को अच्छी तरह ढक दें। ऐसा करने से 24 घंटों या अधिक से अधिक 48 घंटों में उनमें अंकुर निकल आयेंगे। उनको एक बार और धोकर खायें। चाहें तो थोड़ा सैंधा नमक और नीबू भी डाल सकते हैं।

स्वाद बढ़ाने के लिए आप उसमें धनिया, टमाटर, प्याज, अदरक और हरी मिर्च के टुकड़े और रातभर भिगोये हुए मूँगफली के दाने भी मिला सकते हैं। अंकुरित अन्न खाने से हमारे शरीर के लिए आवश्यक सभी विटामिनों और खनिज पदार्थों की पूर्ति हो जाती है। यह पाचन प्रणाली को सुधारने के लिए भी बहुत लाभदायक है, क्योंकि इन्हें पचाने में शरीर को अधिक श्रम नहीं करना पड़ता। इसके विपरीत आग पर पकाये हुए अन्न को पचाने में आँतों पर बहुत दबाव पड़ता है।

आप चाहें तो पूर्णतः कच्चा खाने अर्थात् आग के सम्पर्क में न आयी हुई वस्तुओं को ही ग्रहण करने का व्रत ले सकते हैं। इसे अपक्वाहार कहा जाता है बहुत कारगर सिद्ध हुआ है। यदि हम अपने आहार में अन्न और फलों का पर्याप्त अनुपात बनाये रखें और मूँगफली के दानों के रूप में चिकनाई भी लेते रहें, तो अपक्वाहार से किसी भी प्रकार की हानि होने की कोई सम्भावना नहीं हैं।

छोड़ दे जो समय के साथ प्रसांगिक नहीं हैं। हवन अच्छी चीज है पर खुद करें अगर सालों आर्य समाज जाने के बाद भी आपको हवन करने के लिये पुरोहित बुलाना पड़ता है जब अपने आप को हवन प्रेमी न कहें। अपितु आप तो इस योग्य होने चाहिये की दूसरों को हवन सिखाये।

जब हम अपने बच्चों को गुरूकुल नहीं भेजते और गुरूकुलों से पढ़े व्यक्ति भी अपने बच्चों को नहीं भेजते इसका सीधा अर्थ है कि गुरूकुलों की शिक्षा समय के अनुसार प्रसांगिक नहीं हैं। इसके लिये पैसे देना भी गलत हे क्योंकि जो भोजन आप खुद नहीं खाना चाहते वह दूसरों को परोसना पाप है।

१० का शेष भाग
११ पेज पर

Hidden facts of Indian history

K.C Garg

Sardar Vallabhbhai Patel, the then Deputy Prime Minister and Home Minister of India, whose 137th birth anniversary is on October 31, was insulted, humiliated and disgraced by the then Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru, during a Cabinet meeting.

"You are a complete communal and I'll never be a party to your suggestions and proposals," Nehru shouted at Patel during a crucial Cabinet meeting to discuss the liberation of Hyderabad by the Army from the tyranny of the Razakkars, the then Nizam's private army.

"A shocked Sardar Patel collected his papers from the table and slowly walked out of the Cabinet room. That was the last time Patel attended a Cabinet meeting. He also stopped speaking to Nehru since then," writes MKK Nair, a 1947 batch IAS officer, in his memoirs "With No Ill Feeling to Anybody."

Nair had close ties with both Sardar and VP Menon, his Man Friday. Though Nair has not written the exact date of the above mentioned Cabinet meeting, it could have happened during the weeks prior to the liberation of Hyderabad by the Indian Army.

Operation Polo, the mission to liberate Hyderabad from the Nizam, began on September 13, 1948 and culminated on September 18. While Sardar Patel wanted direct military action to liberate Hyderabad from the rape and mayhem perpetrated by the 200,000 Razakars , Nehru preferred the United Nations route.

Nair writes that Nehru's personal hatred for Sardar Patel came out in the open on December 15, 1950, the day the Sardar breathed his last in Bombay, now Mumbai.

"Immediately after he got the news about Sardar Patel's death, Nehru sent two notes to the Ministry of States. The notes reached VP Menon, the then Secretary to the Ministry.

In one of the notes, Nehru had asked Menon to send the official Cadillac car used by Sardar Patel to the former's office. The second note was shocking. Nehru wanted government secretaries desirous of attending Sardar Patel's last rites to do so at their own personal expenses.

"But Menon convened a meeting of all secretaries and asked them to furnish the names of those who want to attend the last rites of Patel. He did not mention anything about the note sent by Nehru. Menon paid the entire cost of the air tickets for those secretaries who expressed their wish to attend Sardar's last journey. This further infuriated Nehru."

Nair has written about his memoirs in the corridors of power in New Delhi. Nair's friendship with Patel began during the former's posting in Hyderabad as a civilian officer of the Army.

"I was a bachelor and my guest house was a rendezvous of all those in the inner circle of the then Nizam of Hyderabad. Every night they arrived with bundles of currency notes. We gambled and played flash and the stakes were high. During the game

I served them the finest Scotch. After a couple of drinks, the princes and the junior Nawabs would open their minds and reveal the secret action plans being drawn out in the Nizam's palace. Once intoxicated, they would tell me about the plans to merge Hyderabad with Pakistan after independence. This was information that no one outside the Nawab's close family members and the British secret service were privy to. But I ensured that this information reached directly to Sardar Patel and thus grew our relation," writes Nair.

The relation between Nair and Sardar Patel was such that the former's director general in the ministry told him once: "Sardar Patel keeps an open house for you." Nair, who worked in various ministries during his three-decade long civil service career, writes that the formation of North East Frontier Service under the Ministry of External Affairs by Nehru and the removal of the affairs of the Jammu & Kashmir from the Ministry of Home Affairs, are the major reasons behind the turmoil in both the regions. "This was done by Nehru to curtail the wings of Sardar Patel," Nair has written.Though Sardar Patel was known as a no-nonsense man devoid of any sense of humour, Nair has written about lighter moments featuring him.

One centres around VP Menon with whom Patel had a special relation. Menon had to face ire of Nesamani Nadar, a Congress MP from Kanyakumari, during his visit to Thiruvananthapuram in connection with the reorganisation of States. Nadar barged into Menon's suite in the State Guest House and shouted at him for not obeying his diktats. Menon, who was enjoying his quota of sun-downer, asked Nadar to get out of his room.

A furious Nadar sent a six-page letter to Sardar Patel trading all kinds of charges against Menon. "He was fully drunk when I went to meet him in the evening and he abused me using the filthiest of languages," complained Nadar in his letter.

Sardar Patel who read the letter in full asked his secretary, V Shankar , an ICS officer: "Shankar, does VP take drinks?"

Shankar, who was embarrassed by the question, had to spill the beans. "Sir, Menon takes a couple of drinks in the evening," he said. Sardar was curious to know what was Menon's favourite drink. Shankar replied that Menon preferred only Scotch.

"Shankar, you instruct all government secretaries to take Scotch in the evening," Sardar told Shankar. Nair writes that this anecdote was a rave in the Delhi evenings for a number of years!

Balraj Krishna (92), who authored Sardar's biography, told The Pioneer that Nehru was opposed to Babu Rajendra Prasad, the then President, travelling to Bombay to pay his last respects to Patel. "But Prasad insisted and made it to Bombay," said Krishna.

MV Kamath, senior journalist, said though Nehru too attended the funeral of Patel, it was C Rajagopalachari, who delivered the funeral oration. Prof MGS Narayanan, former chairman of Indian Council of Historical Research, said there was no reason to disbelieve what Nair has written. "But his memoirs did not get the due recognition it deserved. It is a historical chronicle of pre- and post independent India," he said.

IF only Sardar had become PM, as per the votes of CWC, and Gandhi had not dissuaded him, in favor of a sulking Nehru...many of the country's problems would never have seen the day!

इन बातों को सोचिये, अवश्य ऐसा लगेगा कि इस विश्व को चलाने वाली कोइ महान शक्ति है जिस की लिला अपरमपार है।

1– प्राणी भी असंख्यात हैं और योनियां भी असंख्य। क्या विचित्रता है कि एक का रूप दूसरे से नहीं मिलता? जब से सृश्टि करोड़ो वश्रे से चली आ रही है।प्रभु कैसे और किस बुद्धि से ये बनाते हैं,

2– प्रभु ने धरती बनाई परन्तु उसके खण्ड–खण्ड का प्रभाव भिन्न–भिन्न है। कहीं सोना, कहीं चांदी, कहीं लोहा, कहीं पारा, कहीं सोडा, कहीं खान होती है। कोई धरती अन्न की, कोई बाग की, कोई चाय–काफी की, कोई पथरीली, कोई मैदानी है। असंख्य खानें हैं, कोई लवण, कोई नीलम, कोई हीरे पैदा करती है, कहीं नारियल उगते हैं और कहीं आम।

3– जल है तो उनका प्रभाव अलग–अलग। कोई मीठा, कोई तेलिया, किसी से अतिसार (दस्त का रोग), किसी से कब्ज तथा किसी से ज्वर, किसी से स्वास्थ्य–लाभ होता है।

4– रंग बनाये तो नाम एक, किन्तु रूप एक–समान नहीं। पीले रंग को ही लो। आम, सन्तरा, नींबू, गलगल, जामन, आंवला, आलूबुखारा, किसी का स्वाद भी दूसरे से नहीं मिलता।

5– करेला कड़वा, बीज फीका, नीम कड़वी, निम्बोली मीठी, नींबू खट्टा, बीच कड़वा, पीलू मीठे, बीज कड़वा।

6– सन्तरे की बनावट तथा उत्पत्ति देखों। बीज भवेत, डंडी मटियाली, पत्ते

हरे, फूल भवेत और मनोहर सुगन्धवाले, छिलका पीला, फांकें गुलाबी, एक–एक सन्तरे में बारह डलियां और एक–एक फांक में तीन–तीन बीज, एक–एक सन्तरे में 36 बीज।

7– अनार की गुधावट देखो, कैसी बंधी हुई है। एक दो दानों को निकाल लो तो बड़े–से–बड़ा कारीगर वैज्ञानिक भी उसे फिर वहां नहीं जमा सकता।

8–गुलाब के फूल में सुगन्धि, परन्तु पत्ते, डंडी और बज में कुछ भी नहीं।

9– माता के गर्भ में बालक कैसे रहता है और कैसे बढ़ता है? कैसे उसका पालन–पोशण होता है? फिर किस प्रकार गर्भ–गुफा से इतना बड़ा बालक निकल आता है? बलिहार! बलिहार!

10– मकड़ी अपने ही अन्दर से कैसा महीन तार निकालकर किस प्रकार जाल बनाती है? अब जरा वया पक्षी द्वारा बनाये गये धौंसले के बारे में सोच कर देंखे। मनुश्य द्वारा सीमेंट रेत से बनाये लेंटर तो चोने लगते; पानी रिसने लगता है, पर वया पक्षी द्वारा बनाये गये धौंसले से कभी पानी नहीं रिसता।

11– शरीर की आन्तरिक लीला भी प्रभु ने कैसी विचित्र रची है। मनुश्य एक पदार्थ को भी अनेक नहीं बना सकता, किन्तु प्रभु की लीला देखो! मनुश्य अन्न खाता है तो अन्दर जाकर उस अन्न का क्या–क्या बन जाता है। फिर रंग भिन्न–भिन्न। हड्डी, मांस, रूधिर, मज्जा, चर्बी, खाल, नाखून, बाल, वीर्य, थूक, खंखार आदि। ऐसी भारीर व प्रकृति संबंधी अनेक आश्चर्यचकित करने वाली विचित्रताओं का अन्यत्र भी महात्माजी ने वर्णन किया है।

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक–124001 दूरभाशः

परिवार में प्रेम का राज्य कैसे हो सकता है

मनमोहन कुमार आर्य

परिवार को सुसंगठित बनाने में सब लोगों का सुख व समृद्धि है यह तभी सम्भव है जब हम परस्पर विरोधी विचारों से बचें। अथर्ववेद का 3/30/1मन्त्र परिवार में हृदयों व मनों की एकता पर प्रकाश डालता है। यह एक प्रकार से सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार तथा धरती को स्वर्गबनाने का आधार है। आईये, मन्त्र का पाठ करते हैं–

ओ३म् सहृदयंसांमनस्यमविद्वेशं कृणोमि वः। अन्या अन्यमभि हर्यतवत्सं जातांमवाघ्न्या।।

इस मन्त्र का भाब्दार्थ इस प्रकार है। हे गृहवासियो ! मैं परमात्मा, तुम्हारे लिए सहृदयता अर्थात् परस्पर सहानुभूति तथा प्रेमपूर्ण हृदय का, मन में विचारों तथा संकल्पों की एकता का, तथा परस्पर बिना किसी वैर भाव के रहने का उपदेश करता हूं। एक दूसरे को वैसे ही चाहो और प्रेम करो जैसे उत्पन्न हुए बछड़े से गाय करती है। इस मन्त्र में परम पिता परमात्मा पहला उपदेश यह देते हैं कि हे गृहवासियों ! तुम एक दूसरे के साथ सहृदयता का व्यवहार करो अर्थात् परस्पर

सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करो। दूसरे के दुःख को दूर करना और उसे सुख पहुंचाना, यह सहृदयता का भाव है। सहृदयता का अर्थ है हृदय का एक हो जाना। गृहवासियों के देह चाहे भिन्न–भिन्न हैं परन्तु उन सब के हृदय एक हो सकते हैं। जब सब के हृदय एक हो जाते हैं जो दूसरे का दुःख भी अपना दुःख लगता है। यह भावना सहृदयता की भावना है। उदाहरण के लिये दो सहेलियां साथ बैठी रो रही थी। अध्यापिका आई तो उसने पहली से पूछा––––तुम रो क्यों रही हो? उसने उततर दिया–––मेरे माता जी बहुत बिमार हैं। तभी अध्यापिका ने साथ वाली से पूछा––––और तुम क्यों रो रही हो? उसने उत्तर दिया––––––मैं अपनी सहेती के दुख से दुखी हूं। यह है सहृदयता की भावना ।

हमारे प्रेरणा के स्रोत परमात्मा हमें दूसरा उपदेश ''सांमनस्य'' शब्द से देते हैं। सांमनस्य शब्द का अर्थ है मन की एकता का होना। मन प्रतिनिधि है विचारों का और संकल्पोंका। विचारभेद तथा संकल्पभेद परस्पर के विरोध तथा विशमता के कारण बन जाते हैं। जहां हृदय मिले हुए होते हैं वहां विचारों तथा संकल्पों की विशमता भी कम हो जाती है, वहां एक दूसरे के विचारों और संकल्पो का उचित मान तथा आदर करने की ओर झुकाव रहता है। गृहवासियों में एक ओर जहां परस्पर सहृदयता का भाव होना चाहिये वहीं उन में सांमनस्य का भी भाव होना चाहिये। इससे गृहस्थ स्वर्ग धाम बनता है और गृहस्थ से रोग, शोक, दुःख व अशान्ति दूर भाग जाते हैं। जिन परिवारों में यह दो भावनायें होती हैं वहां वैर भाव नहीं रहता और प्रेम का वातावरण बन जाता है। आपस में वैर का या द्वेश का भाव ऐसे व्यक्तियों में जड़ नहीं पकड़ता जहां कि सहृदयता और सांमनस्य के बीज बोए गये हों। गृहस्थ के प्रत्येक सदस्य को चाहिये कि वह एक दूसरे के संग और साथ की उग्र कामना करें। एक दूसरे से मिलने–जुलने के उत्कट अभिलाशी हों। इस से परस्पर प्रेमभाव ब सजयता रहता है । परस्पर न मिलने–जुलने से प्रेम की मात्रा कम होती जाती है। इसलिये सभी गृहवासियों को एक दूसरे के साथ रहने के लिए उग्र कामना करनी चाहिये।

मनमोहन कुमार आर्यपताः 196 चुक्खूवाला–उचय 2 देहरादून–248001फोनः09412985121

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।
जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें
पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English
कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद
0172–2662870, 9217970381

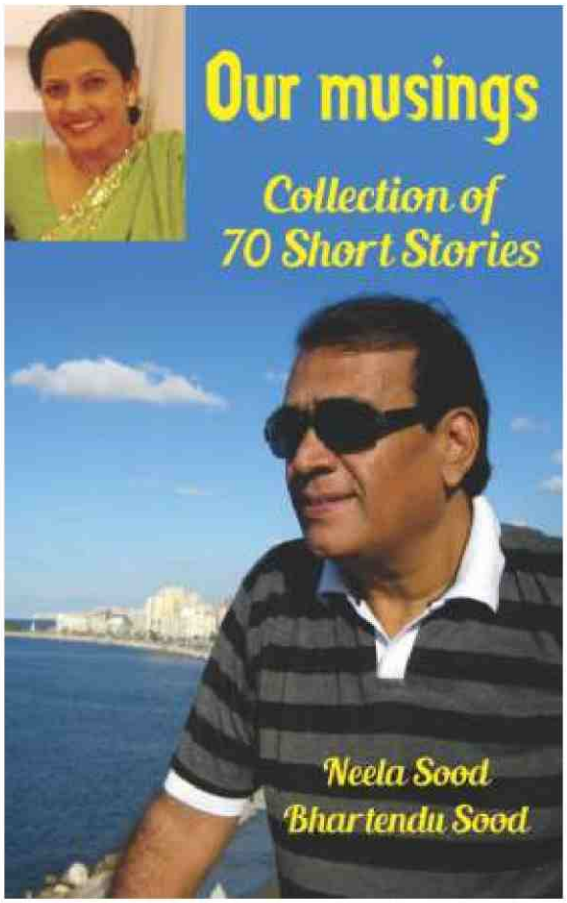

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।।

आज्ञान को दूर करने की प्रार्थना इस लिये की गई है क्योकि अज्ञान बुराई, पाप व दुख का मूल कारण है। ज्ञान की रोशनी देने की इस लिये प्रार्थना की गई है क्योकि ज्ञान सुख का मूल कारण है। ज्ञान का सीधा अर्थ है जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही जानना। इसी तरह अज्ञान वह है जो कि हमें जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही न जानने दे। यह अज्ञान ही होता है जिसके कारण हम ढोंगी बाबो को भगवान समझने लगते हैं। इसी तरह ज्ञान ही हमें ईश्वर के ठीक रूप को बताकर धोखे फरेंव से बचाता है। मिथ्या ज्ञान का दूर होना ही दुख का निवारण है। It is rightly said , there are no eyes that see like knowledge

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

कोई क्या कहेगा? जीवन में आशातीत सफलता के लिए ज़रूरी है इस विचार से पूरी तरह मुक्ति

सीताराम गुप्ता

एक लड़का एक बड़ा–सा बोरा लिए एक कॉलोनी के एक कूड़े के एक ढेर के पास आता है और उस कूड़े में से कुछ काम की चीज़ें निकालकर अपने बोरे में डालने लगता है। जैसे ही वह कूड़े के उस ढेर के पास आता है आसपास के कुत्ते उस पर ज़ोर–ज़ोर से भौंकना शुरू कर देते हैं। लड़का कुत्तों के भौंकने पर ध्यान न देकर अपने काम में लगा रहता है। अपना काम पूरा कर लेने के बाद वह दूसरी कॉलोनियों में जाता है और कूड़े–कचरे के ढेरों में से अपने लिए ज़रूरी चीज़ें निकालकर अपने बोरे में डालता जाता है। हर जगह कुत्तों का झुंड ज़ोर–ज़ोर से भौंककर उसका स्वागत करता है लेकिन वह इन पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता और अपने काम में लगा रहता है। रोज़ वह अपने बोरे में एकत्र रद्दी व स्क्रैप बेचकर कुछ पैसे कमा लेता है। इस प्रकार से वह न केवल अपने लिए आजीविका का प्रबंध कर लेता है अपितु कूड़े में फैंकी गई बहुमूल्य धातुओं व अन्य दोबारा उपयोग या रीसाइकिल किए जा सकने वाली वस्तुओं को कूड़े में जाने से रोककर पर्यावरण की रक्षा करने में भी सहायक होता है। यदि वह कुत्तों के भौंकने से डर कर अपना काम करना छोड़ दे तो न तो उसका पेट ही भर पाए और न पर्यावरण की रक्षा ही हो पाए।

जब भी हम कोई कार्य करते हैं तो इस प्रकार की बाधाओं का आना स्वाभाविक है। कुत्ते ही नहीं मनुश्य भी मनुश्य के काम में कम बाधाएँ उत्पन्न नहीं करते। ज़्यादातर व्यक्तियों का स्वाभाव होता है अन्य लोगों के कार्यों में मीनमेख निकालना। कई लोग इस मीनमेख से घबराकर कोई भी नया कार्य प्रारंभ नहीं करते। उनके मन में एक डर बना रहता है कि लोग क्या कहेंगे? तो क्या इस डर से कि लोग कहीं ग़लत न समझ बैठें या कुछ कमी निकालें हम कार्य करना ही छोड़ दें? बिल्कुल नहीं। लोगों का काम तो कहना है। वो कहते रहें और हम जो ठीक समझें करते रहें। लोगों की परवाह करने से तो काम होने से रहे। बिल्कुल कूड़ा बीनने वाले लड़के की तरह। यदि कूड़ा बीनने वाला लड़का कुत्तों की परवाह करने लगे, उनके भौंकने से अपना रोज़ का काम करना छोड़ दे तो वह तो भूखा ही मर जाए। यदि हम कुत्तों के भौंकने से अपना मार्ग नहीं बदलते तो लोगों के छिद्रान्वेशण से क्यों अपना कार्य करना छोड़ें? लोग क्या कहेंगे इस ओर क्यों ज़्यादा ध्यान दें?

वैसे भी समाज में हर नई बात या नई शुरूआत का विरोध ही होता आया है। जितने भी लोगों ने महान कार्य किए हैं अथवा नई खोजें की हैं प्रारंभ में उन सब का विरोध ही हुआ है। उन्हें हतोत्साहित ही किया गया है। यदि हमारे वैज्ञानिक या अनुसंधानकर्ता भी यही सोचते कि लोग क्या कहेंगे तो क्या आज वो सब आविश्कार जिन्होंने हमारा जीवन अत्यंत आरामदेह बना दिया है संभव हो पाते? कदापि नहीं। दशरथ माँझी पहाड़ काटकर सड़क बनाने से पहले यदि ये सोचते कि लोग क्या कहेंगे तो क्या पहाड़ काटकर रास्ता बना पाते? बिल्कुल नहीं।

उन्होंने न केवल ये नहीं सोचा कि लोग क्या कहेंगे अपितु लोगों के उपहास के बावजूद अपने काम में लगे रहे। लोग क्या कहेंगे? यह एक कमज़ोर मानसिकता की सोच है। यदि हमें वास्तव में कुछ कर दिखाना है तो ''लोग क्या कहेंगे?'' या ''कोई क्या कहेगा?''

इस भयपूर्ण विचार से पूरी तरह मुक्ति पानी होगी।

कई बार हम कोई कोई नेक कार्य या कोई नया कार्य करना चाहते हैं लेकिन ''लोग क्या कहेंगे?'' यह विचार हमें कार्य संपन्न करने अथवा पहल करने से रोक देता है। इसका दुश्परिणाम यह होता है कि हम किसी अच्छे कार्य की पहल करने के श्रेय से वंचित रह जाते हैं और कभी–कभी तो बाद में या तो दोबारा उसे करने का अवसर ही नहीं मिलता या वह विचार ही विस्मृति के गर्भ में चला जाता है। कई बार इसी विचार के कारण पूरा समाज ही किसी महान कृति, सिद्धांत अथवा खोज या अनुसंधान से वंचित रह जाता है। इसीलिए ज़रूरी है कि जब भी कोई नया, अनोखा या मौलिक विचार मन में आए ''लोग क्या कहेंगे?'' या ''कोई क्या कहेगा?'' इस बात की परवाह किए बिना उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए कटिबद्ध हो जाएँ।

देश की प्रसिद्ध महिला बॉक्सर मेरी कॉम की बचपन से ही बॉक्सिंग में गहरी रुचि थी और वो एक बॉक्सर बनना चाहती थीं। एक महिला और बॉक्सिंग का शौक ये बात हमारे परंपरागत समाज में किसी भी तरह से लोगों के गले से नहीं उतरती। लोग क्या कहेंगे इसी बात को लेकर मेरी कॉम के पिता भी उसके इस फैसले के विरुद्ध थे। उन्होंने मेरी कॉम को बॉक्सिंग और पिता में से एक को चुनने के लिए कहा। कोई भी बेटी पिता को कैसे छोड़ सकती है लेकिन मेरी कॉम बॉक्सिंग को भी नहीं छोड़ सकती थीं। विरोध के साथ–साथ उसका अभ्यास जारी रहा और अपने कठिन परिश्रम के बल पर मेरी कॉम ने बॉक्सिंग में अपनी विशिश्ट पहचान बनाई और अंतर्राश्ट्रीय मुक़ाबलों में अनेक बार स्वर्ण पदक हासिल करके पूरे देश का नाम रोशन किया। मेरी कॉम बॉक्सिंग में ही सफल नहीं हुई अपितु पिता का विश्वास और प्यार वापस पाने में भी उसे पूरी कामयाबी हासिल हुई। यदि मेरी कॉम भी सामान्य लोगों की तरह ही ये सोचतीं कि लोग क्या कहेंगे तो वो कभी भी सफलता की इतनी ऊँची सीढ़ियाँ चढ़ने में कामयाब न हो पातीं। कबीर की एक साखी है :

हस्ती चढ़िए ज्ञान को सहज दुलीचा डारि,
स्वान रूप संसार है भूँकन दे झख मारि।

ज्ञान रूपी हाथी की सवारी कीजिए अर्थात् ज्ञानवान बनने, अपने आपको जानने का प्रयास कीजिए और ये तभी संभव है जब हम सहजता का दामन थाम लें। सहजता से ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में ये संसार सबसे बड़ी बाधा है जो कुत्ते की तरह भौंक–भौंककर हमें आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास करता है। अतः आध्यात्मिक सफलता के लिए कुत्ते रूपी संसार को भौंकने दीजिए और ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ते रहिए। अध्यात्म में ही नहीं जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी यही स्थिति है। अधिकांश लोगों का काम ही है। नुक़्ताचीनी करना व लोगों की राह का रोड़ा बनना। कुछ भी करिए लोग कुछ न कुछ कहेंगे अवश्य। या तो लोगों के डर से काम करके आगे बढ़ने का विचार त्याग दीजिए या फिर लोग क्या कहेंगे इस बात को मन में न लाकर दृढ़तापूर्वक अपने संकल्पों को पूरा करने की ओर अग्रसर हो जाइए।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323
Email : srgupta54@yahoo.co.in

Alternative to 'Bypass Surgery'.

Recently, one person was admitted to a Wellknown nursing home at pune, due to severe chest pain. He had an earlier attack in 2012 and was under treatment. The doctors now suggested Angiography.

Upon undergoing Angiography at multi speciality Hospital Doctors diagnosed multiple blockages for which Angioplasty was ruled out and instead, suggested 'Bypass Surgery'.

That evening, he was brought home as doctor suggested his heart being very weak, bypass could be performed only after 10 - 15 days.

Meanwhile, after discussing the matter with relatives and close friends, fresh information came from a family friend.

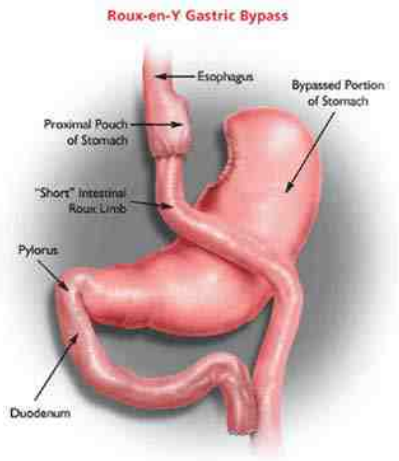

A new treatment known as-"Chelox therapy, Laser therapy vChelation Therapy" has been introduced into the Indian medical theatre.

With this therapy, a patient who has to undergo by-pass need not do so.

Instead, the patient is given about 30 bottles of IV fluids in which certain medicament are injected. The medicine cleans the system and removes all blockages from the heart and the arteries. The number of bottles given may increase depending upon the age-factor and health of the patient.

Cost per bottle may be around Rs.1300/- .

Currently, only a few doctors in India specialise in this field

One of them is DR.Vikrant Laate. In pune.

He has a list of patients who had to undergo by-pass from major hospitals; but, instead after undergoing the new treatment, they are absolutely fine and are leading a normal life. Without or minimum medicine.

Dr. Vikrant Laate
Suvish Holistic Wellness Centre,
Swargate,
PUNE.

''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' सभी प्राणियों को अपनी आत्मा जैसा ही मानो। शायद यह उपदेश किताबों में सिमट कर रह गया है

धर्मएुग में 1942 का एक किस्सा हैं, जिस का विवरण यूं हैं–––––––दिल्ली के सदर बाजार के बारहटूटी चौक पर एक कुआं था। यह कुआं वहां की कमेटी ने बनवाया था। बिना वर्ण व्यवस्था के इस कुएं पर सबका अधिकार था, यदि कोई गरीब, दलित वहां पानी लेने जाता तो उसे यह कह कर भगा दिया जाता कि यह कुआं हिन्दुओं और मुस्लिमों का है। दलितों का इस पर कोई हक नहीं। गजब यह था क यह बात कुऐं पर खड़े होकर हिन्दू कहते थे। मसलन एक मुस्लिम जाति का व्यक्ति तो अपना चमड़े का डोल लटकाकर पानी भर सकता था किन्तु एक दलित महिला या पुरुष अपनी धुली साफ बाल्टी नहीं भर सकती थी और हां इसमें कमाल यह था कि जो दलित मुस्लिम बन जाता था वो कुऐं पर पानी भर सकता था और जब तक वह दलित हिन्दू है तो वह पानी नहीं भर सकता था। व्यवस्था आज भी ज्यों कि त्यों खड़ी है। आज बापुराव का ईश्वर पर विश्वास था। कुआं खोद लिया। यदि कोई अन्य होता तो सोचो क्या करता? अब इस जातिगत व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न उठाते समय सोचना होगा कि हमारे सर्वनाश का कारण कौन, धर्म या जातिवाद?

''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' जैसे उपदेश केवल याद करने के लिये नहीं। आत तो तब है जब स्वामी दयानंद की तरह समाज में पीरर्वतन लाओ।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान द्वारा बहुत अच्छी क्षुरुआत

जो व्यक्ति कल्याणकारी कार्यों के लिये धन देना चाहते हैं वो किसी असहाय और ज़रूरतमन्द रोगी को अपना कर उसके इलाज पर या उसे पुनर्स्थापित करने पर जो खर्च आए उसे देने की पहल कर सकते हैं। इस तरह पैसा किसी संस्था या बिचौलिये के पास न जाकर सीधा असहाय और ज़रूरतमन्द रोगी के पास जाएगा। उसे भी इस बात का पता रहेगा कि वह कौन ऐसा भद्र पुरूश है जिसने कि उसकी सहायता की। इस अच्छे विचार की भूमिका ऐसे है कि पचास वर्शीया दयावती को पिछले महीने रीड़ की हड्डी में भंयकर चोट के कारण अस्पताल में दाखिल किया गया। उसका ओपरेशन हुआ और उसको नया जीवन मिला। पर वह अभी तक अस्पताल में ही है क्योंकि उसके परिवार के पास पोर्टेबल वेंटिलेटर खरीदने के लिये पैसे नहीं हैं। उसको देखते हुए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने एक नई शुरुआत करने का फैसला किया है। यहां रोज 10000 के करीब नये मरीज आते हैं। उन में बहुत से ऐसे होते हैं जो कि दूसरों की आर्थिक सहायता करने के सक्षम होते हैं। यही नहीं, विश्व प्रसिद्व अस्पताल को यह विश्वास है कि इस अच्छी पहल का पता लगते ही बहुत से दानी और कल्याण का काम करने वाले व्यक्ति और संस्थायें आगे आयेंगी। यह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा बहुत अच्छी शुरुआत है इसे बाकी अस्पताल भी अपना सकते हैं।

मृत्यु के पश्चात क्या

कृष्ण चन्द्र गर्ग

(नोट – यह लेख उपनिषदों के आधार पर लिखा गया है। इस विषय पर उपनिषदों से बढ़कर कोई और ग्रन्थ नहीं है।)
आत्मा और शरीर के मेल का नाम जीवन है और इनका अलग होना मृत्यु। आत्मा एक चेतन और ज्ञानवान सत्ता है, शरीर एक जड़ और ज्ञानरहित पदार्थ है। सुख–दुख आत्मा को होता है, शरीर को नहीं। शरीर एक साधन है जिसके माध्यम से आत्मा अपनी सभी क्रियाएं करती है और सुख–दुख भोगती है। आत्मा के निकल जाने पर शरीर कोई भी क्रिया नहीं कर सकता और न ही इसे कोई सुख–दुख होता है।

मृत्यु के समय जब आत्मा शरीर से निकलती है तब आत्मा के साथ मन भी जाता है। शरीर के मरने पर मन भी नहीं मरता। हमारी सभी क्रियाओं के संस्कार मन पर ही पड़ते हैं और ये संस्कार शरीर के मरने पर भी समाप्त नहीं होते। इसलिए मृत्यु के समय जो मन आत्मा के साथ जाता है उस पर अनेक जन्मों के संस्कार अंकित होते हैं।

मृत्यु के पश्चात अगले गर्भाशय में जाने तक आत्मा (मन समेत) ईश्वर के अधीन रहती है। इस समय आत्मा मूर्छित अवस्था में होती है। इस अवस्था में आत्मा बिना शरीर के होने के कारण न खाती–पीती है, न ही कोई क्रिया करती है और न ही सुख–दुख भोगती है। क्योंकि ईश्वर सब जगह विद्यमान है, पूर्ण ज्ञानवान है, सर्व शक्तिमान है, संसार का नियन्ता है और हमारे सब कामों को देखता व जानता है, इसलिए आत्मा को उसके ज्ञान और कर्मों के अनुसार उचित समय और उचित स्थान मिलने पर नया जन्म दे देता है। मृत्यु के पश्चात अगले गर्भाशय में जाने के बीच कुछ समय लग सकता है –

वह समय थोड़ा भी हो सकता है और ज्यादा भी हो सकता है। जन्म के पश्चात नए माता–पिता के द्वारा ही उसके खान–पान तथा रहन–सहन की व्यवस्था की जाती है। बच्चे के जन्म के साथ ही ईश्वर माता के स्तनों में दूध पैदा कर देता है और वह दूध बच्चे के लिए सर्व हितकारी होता है। इसलिए मनुष्य के मरने के पश्चात उसके निमित भोजन–वस्त्र आदि का दान, श्राद्ध आदि सब व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण काम हैं। और भी, मनुष्य के मरने के पश्चात आवश्यक नहीं कि वह अगले जन्म में मनुष्य ही बने। मनुष्य जीवन में किए कर्मों के अनुसार वह पशु–पक्षी या कीट–पतंग की योनि में भी जा सकता है। अगर मनुष्य जन्म में किए अच्छे काम ज्यादा हैं तो अगला जन्म मनुष्य का ही मिलता है। अगर बुरे काम ज्यादा हैं तो दूसरी योनियों में जाना पड़ता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है। यह सब उसकी न्याय व्यवस्था से ही होता है।

कुछ लोग समझते हैं कि मृत्यु के समय ईश्वर के दूत, जिन्हें यम कहा जाता है, आते हैं और आत्मा को खींच कर ले जाते हैं। यह बात अज्ञानता की है। यम शब्द का अर्थ है सब प्राणियों के कर्मफल की व्यवस्था करने वाला और सब अन्यायों से पृथक रहने वाला। इसलिए ईश्वर का एक नाम यम भी है। अतः ईश्वर ही आत्मा को शरीर में प्रवेश करता है और ईश्वर ही आत्मा को शरीर से अलग करता है। ईश्वर को अपने काम करने के लिए किसी दूत या पीर, पैगम्बर, अवतार, एजैंट आदि की जरूरत नहीं है। वह सर्वशक्तिमान है, अपने सभी काम करने में वह समर्थ है।
भूत–प्रेत आदि नामों से भी लोगों के मनों में बड़ा भय और पाखण्ड भरा रहता है। जब कोई मनुष्य मर जाता है उसके मृतक शरीर को संस्कृत भाषा में प्रेत कहते हैं। जो पहले था और अब नहीं रहा उसे भूत कहते हैं। अतः भूत–प्रेत नाम की कोई योनियां आदि नहीं हैं। ये बातें व्यर्थ के बहकावे की हैं।

लोगों को बहकाया जाता है कि मृत्यु के बाद बारह दिनों तक आत्मा भटकती रहती है। यह बात भी गलत है। जैसे पहले लिखा जा चुका है कि मृत्यु से लेकर अगले गर्भाशय में जाने तक आत्मा ईश्वर के अधीन रहती है, भटकती नहीं। इस स्थिति में आत्मा अत्यन्त मूर्छित अवस्था में होती है।

लोगों को बताया जाता है कि चौरासी लाख योनियां हैं और इतनी योनियों में जाने के बाद ही मनुष्य योनि मिलती है। चौरासी लाख योनियां हैं या कम–ज्यादा हैं – यह तो कोई नहीं जानता। हां, सब योनियों में जाने के बाद ही मनुष्य का शरीर मिलता है – यह बात पूर्णतया गलत है। हमारे सामने बहुत से उदाहरण हैं कि मनुष्य मर कर अगले जन्म में भी मनुष्य ही बन गया। और भी, ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, मनुष्य जीवन में अच्छे कर्म करने वाले को अगला जन्म मनुष्य का ही देता है। बुरे काम करने वाले को पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि योनि में डालकर, बुरे कर्मों का फल भुगताकर फिर मनुष्य शरीर दे देता है।
कुछ लोग समझते हैं कि गर्भ में बच्चा बहुत तकलीफ में होता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मुझे यहां से जल्दी बाहर निकाल। यह बात भी सत्य नहीं हैं। गर्भ में बच्चे को कोई विशेष ज्ञान नहीं होता और न ही उसको कोई विशेष सुख–दुख होता है। महाभारत के अभिमन्यु की कथा जो सुनी–सुनाई जाती है कि उसे गर्भ में ही व्यूहचक्र में घुसने का ज्ञान हो गया था – सही नहीं है। ऐसी बातें लोग अपने मन को बहलाने के लिए घड़ लिया करते हैं। हो सकता है कि अभिमन्यु को यह ज्ञान उसके बचपन में दे दिया गया हो।

मरने के पश्चात कोई व्यक्ति स्वर्ग में जाता है और कोई नरक में। इस धारणा को भी समझने की जरूरत है। स्वर्ग–नरक नाम के कोई विशेष स्थान नहीं हैं। जो मनुष्य विशेष सुख की स्थिति में है वह स्वर्ग में है और जो कोई विशेष दुख की स्थिति में है वह नरक में है। यह मनुष्य के द्वारा किए कामों के आधार पर ही होता है – अच्छे परोपकार के कामों के फल स्वरूप मनुष्य सुख भोगता है और दूसरों का बुरा करने के फल स्वरूप मनुष्य दुख भोगता है – कुछ वर्तमान जन्म में और कुछ अगले जन्म में। यही स्वर्ग–नरक की परिभाषा है।

आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में – परमात्मा एक है। सारे ब्रह्माण्ड को वही एक परमात्मा चलाता है। आत्माएं अनन्त हैं। प्रत्येक जीवित प्राणी में एक अलग और स्वतन्त्र आत्मा है। आत्माएं ईश्वर का अंश नहीं हैं। आत्माएं और परमात्मा सदा रहते हैं। ये न कभी जन्मते हैं और न ही कभी मरते हैं। परमात्मा बहुत बड़ा है, सर्वत्र व्यापक है। आत्मा बहुत छोटी है। उपनिषद कहता है कि बाल के कोने के दस हजार भाग किए जाएं आत्मा उनमें एक भाग से भी छोटी है। इसलिए आत्मा का कोई भार नहीं होता। शरीर से जब आत्मा निकलती है तब उसके साथ प्राण यानि हवा भी निकलती है। हवा का भार होता है।

आत्मा अपने आप में न पुलिंग है, न स्त्रीलिंग है और न ही नपुंसक है। वह जैसा जैसा शरीर पाती है वैसी वैसी कही जाती है जैसे पानी का अपना कोई रंग नहीं है, उसमें जो रंग डाल दिया जाता है पानी उसी रंग का कहा जाता है। गीता में लिखा है कि आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता और हवा सुखा नहीं सकती। और भी – जैसे मनुष्य फटे, पुराने कपड़े उतारकर नए कपड़े पहन लेता है, ऐसे ही आत्मा निक्कमा शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है।

मृत्यु होने पर मनुष्य शरीर को जला देने के बाद उसके प्रति और कोई कर्म शेष नहीं रह जाता। मरने के पश्चात दान–पुण्य आदि किया हुआ उस मृत व्यक्ति को नहीं लगता। दाह संस्कार के पश्चात तीसरे दिन श्मशान में जाकर राख–अस्थियां आदि को इक्ट्ठा करके श्मशान घाट में ही भूमि में दबा देना चाहिए। हरिद्वार या कहीं और जाकर नदी–नाले में अस्थियां आदि डालना व्यर्थ है। सद्गति या दुर्गति मनुष्य के अपने कार्यों से होती है, मरने के पश्चात उसके निमित दान आदि से नहीं होती। दान भी – सुपात्र को दिया हुआ ही सुखकारी होता है, कुपात्र को दिया दान दुखकारी होता है।

831 सैक्टर 10ए पंचकूला, हरियाणा पंचकूला (हरियाणा) ए दूरभाष : 0172–4010679ए फोन 098780–93107

बनि दवा के चेहरे की तकलीफों का ईलाज

हमारी नाभि का सीधा सम्बन्ध हमारे चेहरे से होता है.चहरे की समस्याओ के लिए सरल इलाज़ करें-

1 मुँहासे हो तो नीम का तेल नाभि में लगाये

2 होठ फटते हैं तो सरसों का तेल नाभि में लगाये

3 चेहरे में चमक लाने के लिए बादाम का तेल लगाएं

4 चेहरे को मुलायम रखने के लिए शुद्ध देशी घी नाभि में लगाये

5 चेहरे के दाग़ धब्बे मटिाने के लिए नीम्बू का तेल नाभि में लगाये

6 चेहरे पर सफ़ेद चकत्ते (ललौसी) हैं तो नीम का तेल नाभि पै लगाएं.

7 पीरयिड्स में दर्द हो तो ब्रांडी को कॉटन में भिगोकर नाभि में रखें

ऊपर बताये गए तेलों को रुई में भिगोकर भी नाभि में रख सकते हैं और ऊपरसे बैंडेज या मेडकिल टेप लगा लें.

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।
Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Neelam sharma family with Ashram children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

e/kdj dkMk लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.k ds 63 o"k

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuHkkoks us cky vkJe ds fy, nku fn;k

Surya s nath

Subash Thapar

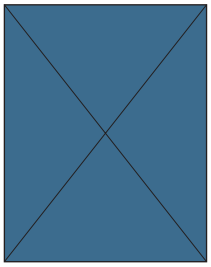

Amir Chand Tandon

Sushma rani

Rakesh Soni

Swasti

Kanta Makkar

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।
Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870